1

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य समाज मानव सेवा के 150 स्वर्णिम वर्ष 1875 ~ 2025

वर्ष 48, अंक 24 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 07 मार्च, 2025 से रविवार 13 अप्रैल, 2025

विक्रमी सम्वत् 2082 सृष्टि सम्वत् 1960853126

दयानन्दाब्द : 202 पृष्ठ : 8

वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150

ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली में आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के आयोजनों का भव्य शुभारम्भ

150वाँ आर्यसमाज स्थापना दिवस विशेष संकल्पों के साथ सम्पन्न

आर्य समाज के धर्माचार्यों, आर्यवीर-वीरांगनाओं, आर्य महिलाओं, विद्यालयों-गुरुकुलों के बच्चों-शिक्षक-शिक्षिकाओं, आर्य समाज के प्रधान-प्रधानाओं एवं अन्य सभी संगठनों के अधिकारियों ने सामूहिक रूप से कीं

आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार, विस्तार और मानव सेवा के संकल्पों के साथ विश्व कल्याण की प्रार्थनाएं

महर्षि दयानन्द की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के समापन के अवसर पर 9-10-11-12 अक्तूबर, 2025 को दिल्ली में होगा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन

-सुरेन्द्र कुमार आर्य, अध्यक्ष, ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति एवं चेयरमैन, जे. बी.एम. ग्रुप

मानव सेवा और राष्ट्र की आजादी में आर्य समाज का अहम योगदान - श्रीमती रेखा गुप्ता, मुख्यमन्त्री

मानव सेवा के यज्ञ की अग्नि को सदैव प्रज्ज्वलित रखेगा, आर्य समाज - धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली सभा

मानव कल्याण की क्रांति का उत्सव है, आर्य समाज स्थापना दिवस - किरण चोपड़ा, अध्यक्षा पंजाब केसरी

40 देशों में आर्य समाज के सेवा कार्य प्रशंसनीय और अनुकरणीय - विजेन्द्र गुप्ता, अध्यक्ष, दिल्ली विधान सभा

आर्य समाजी होना गौरव की बात, युवा शक्ति ले आगे बढ़ने का संकल्प - प्रवेश वर्मा, लोक निर्माण मन्त्री दिल्ली

विस्तृत शेष पृष्ठ 3-4-5, 7 एवं 8 पर

देववाणी-संस्कृत

अहो आश्चर्य! पानी में मीन प्यासी

वेद-स्वाध्याय

अपां मध्ये तस्थिवांसं तृष्णाविदज्जरितारम्। मृळा सुक्षत्र मृळय॥
-ऋ० 7।89।4
ऋषिः-वसिष्ठ :।। देवता-वरुणः।। छन्दः-आर्षीगायत्री।।

शब्दार्थ - **जरितारम्** = मुझ स्तोता को **अपां मध्ये तस्थिवांसम्** = पानी के बीच में बैठे हुए भी **तृष्णा** = **अविदत्** = लगी है। **सुक्षत्र** = हे शुभ शक्तिवाले! **मृळ**= मुझे सुखी कर, **मृळय**=सुखी कर।

विनय- हे प्रभो! क्या तुम्हें मेरी दशा पर तरस नहीं आता? सन्त लोग मेरे-जैसों पर हँस रहे हैं और कह रहे हैं, ''मुझे देखत आवत हाँसी, पानी में मीन प्यासी।'' सचमुच मैं तो पानी के बीच में बैठा हुआ भी प्यास से व्याकुल हो रहा हूँ। तेरे करुणा-सागर में रहता हुआ भी मैं दुःखी हूँ, सन्तप्त हूँ। जब तूने मेरी इच्छाओं को पूरा करने के लिए ही यह संसार ऐश्वर्यो से भर रखा है और तुम प्रतिक्षण मेरी एक-एक आवश्यकता को बड़ी सावधनी से ठीक-ठीक स्वयं पूरा कर रहे हो, तब मुझे अपने में कोई इच्छा या कामना रखने की क्या आवश्यकता है? परन्तु फिर भी न जाने क्यों मुझे अनेक तृष्णाएँ लग रही हैं, सैकड़ों कामनाएँ मुझे जला रही हैं। हे नाथ! मैं क्या करूँ? इस विषम दशा से मेरा कौन उद्धार करेगा? हे उत्तम शक्तिवाले! मैं इतना अशक्त हो गया हूँ-इतना निर्बल हूँ कि सामने भरे पड़े हुए पानी से अपनी प्यास बुझा लेने में असमर्थ हूँ। मैं जानता हूँ कि मुझे क्या करना चाहिए, किन्तु कमजोरी इतनी है कि उसे मैं कर नहीं सकता। हे सच्चिदानन्दरूप! मै देखता हूँ कि आत्मा में सचमुच अपरिमित बल है, तो भी मैं उस बल को ग्रहण नहीं कर सकता। मैं जानता हूँ कि मेरी आत्मा अमूल्य ज्ञान-रत्नों का भण्डार है, परन्तु मैं इस रत्नाकर के बीच में बैठा हुआ भी ज्ञान का भिखारी बना हुआ हूँ। मेरे आनन्दमय प्रभो! मैं जानता हूँ कि तुम सर्वदा, सर्वत्र हो, सदा मेरे साथ हो, पर फिर भी मैं कभी आनन्द नहीं प्राप्त कर पाता। अरे, मैं तो अमृत के सागर में पड़ा मरा जा रहा हूँ। तेरी अमृतमय गोद में बैठा हुआ, स्वयं अमृतत्व होता हुआ बार-बार मौत के मुँह में जा रहा हूँ। हे नाथ! अब तो मुझ पर दया करो! मुझे इस विषम अवस्था से उबार लो! अब तो मुझे सुखी कर दो! हे परमकारुणिक! हे सुक्षत्र! मुझे इतना क्षत्र-इतना बल तो दे दो कि मैं सामने भरे पड़े जल का सेवन तो कर सकूँ, इससे अपनी तृष्णा शान्त करके सुखी तो हो सकूँ। हे शक्तिवाले! जिस तूने मुझे इस पानी के सागर में रखा है, वही तू मुझे इसके पीने का सामर्थ्य भी प्रदान कर, जिससे मैं अपनी प्यास बुझाकर सुखी हो सकूँ। हे नाथ! मुझे सुखी कर, सुखी कर, अब तो अपनी शक्ति देकर मुझे सुखी कर! यह तेरा स्तोता कब से चिल्ला रहा है, अब तो इसे सुखी कर दे!

-:साभार:-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

वक्फ की मनमानी से मिली भारत राष्ट्र को मुक्ति

संसद के दोनों सदनों में पारित: वक्फ संशोधन बिल का स्वागत करता है आर्यसमाज

वक्फ बोर्ड उस समय समूचे भारत में चर्चा का विषय बन गया जब तमिलनाडु के तिरुचेंदुर गांव की करीब 330 एकड़ जमीन पर वक्फ बोर्ड ने दावा करते हुए अपना बता दिया था। यहाँ तक कि गांव में एक सदियों पुराना मणेडियावल्ली चंद्रशेखर स्वामी मंदिर भी इस्लाम के आगमन से पहले का है, यह मंदिर 1500 साल पुराना है, इस पर भी वक्फ ने संपत्ति यानी अल्लाह की संपत्ति बताते हुए अपना दावा ठोक दिया था। ऐसा करते-करते वक्फ बोर्ड के पास भारत में रेलवे और रक्षा मंत्रालय के बाद सबसे ज्यादा जमीन हो गई, करीब 9.4 लाख एकड़। इतनी जमीन कि दिल्ली जैसे 3 शहर बस जाएं।

वक्फ बोर्ड के जबरदस्ती कब्जे को लेकर विवाद चलते रहे हैं। पिछले कुछ समय से विवाद गहराने लगे तो सरकार ने वक्फ कानून में बदलाव के बारे में सोचा और वक्फ बोर्ड के स्ट्रक्चर में बदलाव के लिए बिल लेकर आई। काफी विवाद के बाद अब यह बिल लोकसभा और राज्यसभा में पारित हो गया। हालाँकि मुस्लिमों का एक बड़ा तबका इसके खिलाफ हो गया।

दरअसल, वक्फ संशोधन बिल में अब जो बदलाव किए गए हैं, वो यह हैं कि इसके आर्टिकल 9 और 14 में बदलाव कर 2 महिला मेंबर शामिल होंगी। दूसरा, गैर-मुस्लिम मेंबर शामिल होंगे। तीसरा, शिया, सुन्नी सहित पिछड़े मुस्लिम समुदायों से भी मेंबर होंगे। चौथा, बोहरा और अगखानी मुस्लिम समुदायों के लिए अलग वक्फ बोर्ड बनेगा। पांचवा, केंद्र सरकार सेंट्रल वक्फ काउंसिल में 3 सांसदों (लोकसभा से 2, राज्यसभा से 1) को रख सकेगी, जरूरी नहीं कि वे मुस्लिम हों। अब तक तीनों सांसद मुस्लिम होते थे।

वक्फ बोर्ड के जबरदस्ती कब्जे को लेकर अनेक विवाद चलते रहे हैं। पिछले कुछ समय से विवाद गहराने लगे तो सरकार ने वक्फ कानून में बदलाव के बारे में सोचा और वक्फ बोर्ड के स्ट्रक्चर में बदलाव के लिए बिल लेकर आई। काफी विवाद के बाद अब यह बिल लोकसभा और राज्यसभा में पारित हो गया। हालाँकि मुस्लिमों का एक बड़ा तबका इसके खिलाफ हो गया।

दरअसल, वक्फ संशोधन बिल में अब जो बदलाव किए गए हैं, वो यह हैं कि इसके आर्टिकल 9 और 14 में बदलाव कर 2 महिला मेंबर शामिल होंगी। दूसरा, गैर-मुस्लिम मेंबर शामिल होंगे। तीसरा, शिया, सुन्नी सहित पिछड़े मुस्लिम समुदायों से भी मेंबर होंगे। चौथा, बोहरा और अगखानी मुस्लिम समुदायों के लिए अलग वक्फ बोर्ड बनेगा। पांचवा, केंद्र सरकार सेंट्रल वक्फ काउंसिल में 3 सांसदों (लोकसभा से 2, राज्यसभा से 1) को रख सकेगी, जरूरी नहीं कि वे मुस्लिम हों। अब तक तीनों सांसद मुस्लिम होते थे।

वक्फ बोर्ड की प्रॉपर्टी पर नियंत्रण सीएजी या सरकार की तरफ से नियुक्त ऑडिटर वक्फ प्रॉपर्टी का ऑडिट करेंगे। इसमें राज्य सरकार, प्रोपर्टीज के सर्वे के लिए सर्वे कमिश्नर की जगह जिला कलेक्टर को नियुक्त करेगी। साथ ही बोर्ड को अपनी प्रोपर्टी जिला कलेक्टर के ऑफिस में रजिस्टर करानी होगी और कलेक्टर यदि किसी वक्फ प्रॉपर्टी को सरकारी संपत्ति मानता है, तो उसे राजस्व रिकॉर्ड में बदलाव करवा कर राज्य सरकार को इसकी रिपोर्ट देनी होगी तथा जब तक कलेक्टर किसी विवादित प्रॉपर्टी पर रिपोर्ट नहीं देते, उसे वक्फ प्रॉपर्टी नहीं माना जाएगा। यानी सरकार के फैसला न लेने तक प्रॉपर्टी को वक्फ बोर्ड कंट्रोल नहीं कर सकेगा। साथ ही बिना कागजात के कोई संपत्ति वक्फ नहीं मानी जाएगी। मसलन, मस्जिदें वक्फनामे के बिना भी वक्फ की संपत्ति होती थी, अब ऐसा नहीं होगा।

नये बदलाव के अनुसार धारा-40 खत्म होगी। इसके तहत वक्फ को किसी संपत्ति को अपनी संपत्ति घोषित करने का अधिकार था। अब इसमें वक्फ ट्रिब्यूनल के फैसले को कोर्ट में चुनौती दी जा सकेगी। अभी तक वक्फ ट्रिब्यूनल के फैसले को सिविल, राजस्व या दूसरी अदालतों में चुनौती नहीं दी जा सकती थी। इसके अलावा, नए कानून के बनने से पहले या बाद में, किसी सरकारी संपत्ति को वक्फ की प्रॉपर्टी घोषित किया गया है, तो अब वह वक्फ प्रॉपर्टी नहीं होगी। असल में, 8 अगस्त 2024 को लोकसभा में वक्फ संशोधन बिल पेश किया गया। देश भर में इसके खिलाफ प्रदर्शन हुए। इसके बाद, बिल के ड्राफ्ट को संसद की जॉइंट पार्लियामेंट्री कमेटी को भेज दिया गया। 27 जनवरी 2025 को जॉइंट पार्लियामेंट्री कमेटी ने बिल के ड्राफ्ट को मंजूरी देकर इसमें शामिल एनडीए सांसदों के सुझाए 14 संशोधनों को स्वीकार किया, जबकि विपक्षी सांसदों के संशोधनों को खारिज कर दिया। 31 सदस्यीय जॉइंट पॉर्लियामेंट्री कमेटी में 21 सदस्य लोकसभा और 10 सदस्य राज्यसभा के थे। कुल 31 में से 19 एनडीए के सांसद, 11 विपक्षी दलों के सांसद और असदुद्दीन ओवैसी शामिल थे। 13 फरवरी 2025 को जॉइंट पार्लियामेंट्री कमेटी की रिपोर्ट संसद में पेश की गई। 19 फरवरी 2025 को कैबिनेट की बैठक में बिल को मंजूरी मिल गई और अब 3 अप्रैल तक बिल लोकसभा और राज्यसभा में पास हो गया। देखा जाए तो आजादी के बाद 1954 में वक्फ एक्ट बना, 1995 में कुछ संशोधनों के साथ नया वक्फ एक्ट बना। 2013 में भी क बदलाव हुए। लेकिन 2022 से अब तक देश के अलग-अलग हाई कोर्ट में वक्फ एक्ट से जुड़ी करीब 120 याचिकाएं दायर कर मौजूदा कानून में कई खामियां बताई गईं। इनमें से करीब 15 याचिकाएं मुस्लिमों की तरफ से हैं। याचिकाकर्ताओं का सबसे बड़ा तर्क यह था कि एक्ट के सेक्शन 40 के मुताबिक, वक्फ किसी भी प्रॉपर्टी को अपनी प्रॉपर्टी घोषित कर सकता है। इसके खिलाफ कोई शिकायत भी वक्फ बोर्ड ट्रिब्यूनल में ही की जा सकती है और इस पर अंतिम फैसला ट्रिब्यूनल का ही होता है। आम लोगों के लिए वक्फ जैसी ताकतवर संस्था के फैसले को कोर्ट में चैलेंज करना आसान नहीं है। दरअसल, मामले को एक-एक करके समझिए। थोड़े समय पहले दिल्ली के महरौली क्षेत्र का मामला सामने आया था। यहां के वार्ड नं. 8 में एक भूखंड किसी भार्गव नाम के व्यक्ति का है, जिसकी कीमत करोड़ों रुपये में है। उन्होंने 1987-88 में इस भूखंड को एक मुसलमान से खरीदा था। कुछ समय पहले भूखंड की घेराबंदी की जाने लगी तो दिल्ली वक्फ बोर्ड के तत्कालीन अध्यक्ष और आम आदमी पार्टी के विधायक अमानतुल्लाह खान ने उस भूखंड के बीच में मौजूद एक पुराने ढांचे को मजहबी स्थल बताना शुरू किया और कई बार जबरन उस पर कब्जा करने का भी प्रयास किया। मुसलमानों की भीड़ के साथ खूब हंगामा किया। अभी यह मामला भी दिल्ली उच्च न्यायालय में लंबित है।

इससे पहले 28 दिसम्बर 2021 को उछला था जब भगवान श्री कृष्ण की नगरी द्वारिका की भूमि पर वक्फ बोर्ड की दावेदारी हुई। तब प्रतिदावों के बीच राज्य सभा सदस्य परिमल नथवानी ने बोर्ड के दावे पर आश्चर्य जताया था कि आखिर कृष्ण नगरी में वक्फ बोर्ड जमीन का मालिकाना दावा कैसे कर सकता है? इसी तरह दिन पर दिन वक्फ की जमीन बढ़ती गई और तीन दिल्ली जितना क्षेत्रफल वक्फ ने कब्जा लिया। सवाल बना बंटवारे के बाद देश में जमीन उतनी ही है, जितनी पहले थी। फिर वक्फ बोर्ड की जमीन कैसे बढ़ रही है? अगर पिछले 7 साल का अनुमानित आंकड़ा लें तो देश में करीब 2 लाख नई मजारें पैदा हो गईं।

– शेष पृष्ठ 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

150वाँ आर्यसमाज स्थापना दिवस विशेष संकल्पों के साथ सम्पन्न

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की अमर वाटिका आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष पर समस्त आर्यजन अत्यंत गौरव का अनुभव कर रहे हैं। महर्षि जी द्वारा सन 1875 में मुंबई में स्थापित आर्य समाज आज एक विशाल वटवृक्ष के रूप में संपूर्ण विश्व में मानव सेवा और राष्ट्र भक्ति के अभियान चला रहा है। भारत के कोने-कोने में और विदेशों में निरन्तर एक से बढ़कर एक ऐतिहासिक आयोजन समारोह पूर्वक संपन्न हो रहे हैं। इस क्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केंद्रीय सभा के संयुक्त तत्वावधान में 6 अप्रैल 2025 को तालकटोरा स्टेडियम में 150वें स्थापना वर्ष के आयोजनों का भव्य शुभारंभ एक विशेष समारोह के रूप में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ से हुआ जिसमें श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, अध्यक्ष ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति एवं अध्यक्ष जेबीएम ग्रुप, श्रीमती एवं श्री सुरेंद्र कुमार रैली जी, प्रधान आर्य केंद्रीय सभा, श्रीमती सुषमा शर्मा जी, उद्योगपति, श्री एस के शर्मा जी, मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, श्री राजकुमार गुप्ता जी, आर्य प्रतिभा विकास केंद्र, हरि नगर, श्री विजेंद्र गुप्ता जी, स्पीकर दिल्ली विधानसभा, श्री प्रवेश वर्मा जी, लोक निर्माण मन्त्री दिल्ली सरकार, श्री मनजिंदर सिरसा, कैबिनेट मंत्री दिल्ली सरकार, श्रीमती शिखा राय जी, विधायक, श्रीमती रेखा गुप्ता जी, मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार, श्री योगानंद शास्त्री, पूर्व मंत्री, श्री रमाकांत गोस्वामी, श्री हरीश खुराना जी, विधायक एवं अनेक अन्य आर्य समाज के अधिकारी, कार्यकर्ताओं ने आहुति देकर विश्व मंगल की कामना की। हाल में कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमती सुकृति माथुर एवं अविरल माथुर के मधुर भजनों के साथ हुआ, उन्होंने महर्षि दयानंद और आर्य समाज की स्थापना को लेकर प्रेरक सारगर्भित और मधुर भजनों से संपूर्ण वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

आर्य समाज के पुरोहित/धर्माचार्यों का सम्मान संकल्प

दिल्ली की आर्य समाजों के पुरोहित धर्माचार्यों को सभा की ओर से माननीय प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने पीत वस्त्र और तिलक लगाकर सम्मानित किया । श्री विनय आर्य जी ने पुरोहितों का सम्मान करते हुए कहा कि आर्य समाज के धर्माचार्य जो हमेशा महर्षि दयानंद की शिक्षाओं और आर्य समाज के प्रचार प्रसार को समर्पित हैं, वे हमारे अग्रज हैं, आज हम 150वें स्थापना वर्ष के आयोजनों के शुभारंभ पर उनका सम्मान करते हुए गौरव का अनुभव कर रहे हैं। पुरोहित सभा के प्रधान, आचार्य श्री प्रेमपाल शास्त्री जी ने इस अवसर पर समस्त पुरोहितों का नेतृत्व करते हुए आर्य समाज की उन्नति, प्रगति और सफलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना की तथा आर्य समाज के सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने का सामूहिक संकल्प लिया। इस अवसर पर पूरा पुरोहित वर्ग अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास के वातावरण में स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा था।

150 ओ३म् पताकाओं के साथ ध्वज यात्रा का विहंगम दृश्य

आर्य समाज की आन, बान और शान का प्रतीक ओम ध्वज यात्रा का विहंगम दृश्य अपने आप में अत्यंत अनुपम और गौरवशाली सिद्ध हुआ। जिस समय ओम ध्वज हाथ में लेकर आर्यवीर तथा आर्य समाज के अधिकारी स्टेडियम में प्रविष्ट हुए तो चारों तरफ ओम का झंडा ऊंचा रहे के उदघोष गूंजने लगे तथा उपस्थित आर्य जन भावविभोर हो गए। सभी ने मिलकर ध्वजागीत गया और मन ही मन संपूर्ण विश्व में ओम ध्वज फहराने का संकल्प लिया।

आर्य वीर, वीरांगना दल का संकल्प और प्रार्थना

आर्य समाज का युवा संगठन आर्य वीर एवं वीरांगना दल के सैनिक आज अपनी पूर्ण वेशभूषा में सजे-धजे अत्यंत उत्साह के साथ उपस्थित हुए। दल का नेतृत्व करते हुए आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के महामंत्री श्री बृहस्पति आर्य जी ने आर्य वीर दल के रणबांकुरों को स्मरण किया और उनसे वीरता, सेवा, साधना और बलिदान से प्रेरणा लेने की बात कही, आर्य समाज के सेवा कार्यों में अपना सर्वस्व अर्पित करने के लिए सामूहिक संकल्प धारण करते हुए आर्य समाज के उज्जवल भविष्य और विस्तार के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की। आर्य वीरांगना दल की ओर से श्रीमती विभा आर्या जी ने वीरांगनाओं द्वारा आर्य समाज की गतिविधियों को सुदृढ़ करने हेतु सेवा कार्यों को पूरे तन-मन-धन से सींचने का संकल्प लेते हुए आर्य समाज की बगिया को संपूर्ण विश्व में फैलाने हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

आर्य महिलाओं द्वारा सामूहिक संकल्प और प्रार्थना

आर्य समाज में महिलाओं का स्थान हमेशा से अग्रणी रहा है, आज के कार्यक्रम में आर्य महिला अधिकारियों को पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया गया था, सभी महिलाएं अपने आप में प्रेरणा की प्रतिमूर्ति दृष्टिगत हो रही थी, महिलाओं के समूह का नेतृत्व करते हुए श्रीमती उषा किरण आर्या जी, श्रीमती सुषमा शर्मा जी और अनेक अन्य बहनों का समूह मंच पर उपस्थित हुआ। श्रीमती उषा किरण आर्या जी ने सामूहिक रूप से आर्य समाज और महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त करते हुए आर्य समाज के उत्थान तथा सेवा कार्यों में सहयोग का संकल्प लेते हुए विश्व व्यापी आर्य समाज संगठन की वृद्धि के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

आर्य विद्यालयों की शिक्षिकाओं का संकल्प और प्रार्थना

यह सब जानते हैं कि आर्य समाज शिक्षा सेवा के क्षेत्र में निरंतर एक अखंड यज्ञ चला रहा है, आज दिल्ली के आर्य विद्यालयों, डी.ए.वी स्कूलों की शिक्षिकाओं के साथ एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग के अध्यक्ष श्री सत्यानंद आर्य जी आर्य, प्रादेशिक सभा के महामंत्री श्री एस.के. शर्मा जी, रघुमल आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अध्यक्ष श्री संजय कुमार जी एवं अनेक अन्य अधिकारी उपस्थित हुए। श्री सत्यानंद आर्य जी और श्री एस. के. शर्मा जी ने आर्य विद्यालयों की ओर से शिक्षा और संस्कार के क्षेत्र में आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाने का सामूहिक संकल्प लिया तथा भारत के उज्जवल भविष्य और विश्व की आशा विद्यार्थियों को सन्मार्ग मिले सबकी उन्नति प्रगति और सफलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

दिल्ली की आर्य समाजों के प्रधानों का समूह

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के प्रधान एक विशेष वेशभूषा में तथा सर पर पगड़ी पहनकर अपनी अपनी जिम्मेदारियां का अनुभव कर रहे थे। सभी एक साथ मंच पर एकजुट होकर आर्य समाज के सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने तथा महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए संकल्पित भाव-भावना से ओत-प्रोत दिखाई दे रहे थे। इस अवसर पर मुंबई सभा के प्रधान श्री हरीश आर्य जी, स्वामी सच्चिदानंद जी, आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान श्री सुरेंद्र रैली जी, महामंत्री श्री सतीश चडडा जी एवं सभी गणमान्य अधिकारियों ने एक साथ संगठन सूक्त का

- शेष पृष्ठ 7 पर

आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के शुभारम्भ समारोह

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित दिल्ली माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता जी का उद्बोधन

दिल्ली की माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता जी ने यज्ञ में आहुति देकर विश्व कल्याण की कामना की तथा अपने विशेष उद्बोधन में आयोजकों को इस सुन्दर कार्यक्रम के लिए बधाई देते हुए आपने कहा कि अगर दो लाइनों में आर्य समाज के सेवा कार्यों को परिभाषित करने का प्रयास करूं तो यही कहना होगा कि-

तुम स्वर्ग नहीं धरती का श्रृंगार करो, सपनों को नहीं सच को स्वीकार करो।
भगवान को दिन-रात रिझाने वालां, तुम भगवान के बंदों से प्यार करो।।

धरती पर मानव सेवा के कार्यों को करने वाली संस्था आर्य समाज ने मानवता को इतना आगे बढ़ाया कि उसकी कोई तुलना नहीं की जा सकती। आर्य समाज व्यक्तित्व निर्माण करने वाली संस्था है, जिसने हजारों लोगों को उस सांचे में ढाला है जो देश और समाज के काम आ सके और यही कारण है कि जब स्वतंत्रता संग्राम चल रहा था तो उसमें बहुत बड़ी सहभागिता आर्य समाज की रही है। उस समय जब समाज में अनेक कुरीतियों फैली हुई थी, उनको दूर करने का, समाज को मार्गदर्शन देने का कार्य महर्षि दयानंद और आर्य समाज ने किया, आज अगर मैं (श्रीमती रेखा गुप्ता जी स्वयं के लिए कहा) इस स्थान पर खड़ी हूं तो यह महर्षि दयानंद जी की ही देन है। महर्षि अगर समाज से कुरीतियों को ना हटाते तो मां-बाप अपनी बेटियों को कैसे पढ़ाते-लिखाते, सरकार ने नारा दिया बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ और उसमें मोदी जी ने जोड़ा की बेटी बढ़ाओ। बेटी का बचाना भी जरूरी है, बेटी का पढ़ाना जरूरी है और बेटी का आगे बढ़ाना जरूरी है। इसके लिए अगर किसी ने आवाज उठाई तो वह आर्य समाज था। आज हजारों बेटियां समाज में सेवा के कार्य कर रही हैं। विश्व भर में आर्य समाज ने शिक्षा के साथ संस्कारों को देने का कार्य किया, हजारों संस्थाएं आज भी शिक्षा प्रदान कर रही हैं, आर्य समाज की संस्थाएं ऐसे नागरिक तैयार कर रही है जो देश के लिए अपना योगदान देने वाले लोग हैं। माना कि हम लोग देश की सरहदों पर नहीं खड़े हैं, इस क्षेत्र में सेवा करना हमारे भाग्य में नहीं है, लेकिन समाज में रहकर समाज के लिए जी सकें ऐसा तो हमें करना ही चाहिए। महर्षि दयानंद ने कहा था कि वेदों की ओर लौटें, वेद हमें जीवन जीने की राह दिखाते हैं, वेदों की शिक्षाओं के अनुसार समाज संगठित होता है और समाज में समानता का भाव भी पैदा होता है, हमें सेवा के क्षेत्र में अपने हाथ आगे बढ़ाने चाहिए।

मैं आर्य समाज से वर्षों से जुड़ी हूं ,जीवन के हर अध्याय पर मैंने हवन किया, प्रार्थना की, मैं जो कुछ भी कर सकूं मानव सेवा के लिए हो ऐसी मैंने प्रार्थना की, अभी जब मैं विधायक बनी तब भी मैंने हवन किया और उसे गेरुवे रंग के पटके की ऊर्जा, रोशनी, प्रेरणा मुझे प्राप्त हुई। मैं यहां पर देख रही हूं कि सभी के गलों में वह गेरुआ वस्त्र है और सभी के चेहरे चमक रहे हैं, 150 वर्ष के संघर्ष के साथ आर्य समाज ने यह सफर पूरा किया है, शिक्षा के साथ मानव समाज को गुणवत्ता प्रदान की है, सरकार भी काम कर रही है और करेगी, पर आर्य समाज का सहयोग अपने आप में अद्भुत है। केंद्र में मोदी और दिल्ली में भाजपा सरकार शिक्षा के लिए बेहतर करने के लिए, पर्यावरण के लिए खूब काम करेगी, आपका आशीर्वाद हमें लगातार मिलेगा। इस अवसर पर आप सभी को ढेरों शुभकामनाएं और ढेरों बधाई।

आर्य समाज की ओर से माननीय मुख्यमंत्री जी का स्मृति चिन्ह और शॉल तथा सम्मान पत्र देकर अभिनन्दन किया गया।

आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के आयोजनों दिल्ली में भव्य शुभारम्भ

यज्ञ में आहुति देते हुए मुख्यमन्त्री श्रीमती रेखा गुप्ता जी एवं सर्वश्री मनजिन्दर सिंह सिरसा, विजेंद्र गुप्ता, प्रवेश वर्मा, श्रीमती शिखा राय, श्रीमती किरण चोपड़ा एस के शर्मा, राजकुमार गुप्ता, श्रीमती सुषमा एवं सुरेंद्र कुमार रैली, विनय आर्य, श्रीमती सुषमा शर्मा, विनीत बहल सपत्नीक, सुरेंद्र कुमार आर्य, अनिल अग्रवाल।

दिल्ली की स्त्री आर्य समाजों की प्रधाना/अधिकारी आर्य महिला जगत का नेतृत्व करते हुए आर्य समाज के उत्थान और मानव सेवा का संकल्प और संगठन की सुदृढ़ता के लिए सामूहिक प्रार्थना करते हुए

दिल्ली की आर्य समाजों के धर्माचार्य महर्षि दयानंद की शिक्षाओं और आर्य समाज के प्रचार प्रसार का संकल्प एवं मानव कल्याण की सामूहिक प्रार्थना करते हुए

आर्य समाज के विद्यालयों/गुरुकुलों के अधिकारियों, शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं विद्यार्थियों ने मानव निर्माण का संकल्प धारण और राष्ट्र के उत्थान हेतु की प्रार्थना

दिल्ली की आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं के प्रधानों ने एकजुट होकर महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज के मिशन को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया और विश्व कल्याण की प्रार्थना की

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
7 अप्रैल, 2025
से
13 अप्रैल, 2025

150वें आर्य समाज स्थापना वर्ष के आयोजनों के शुभारंभ अवसर पर सम्मानित मंच, उपस्थित महानुभावों का अभिनन्दन एवं स्वागत

सांस्कृतिक कार्यक्रमों का विहंगम दृश्य एवं 150 वर्षों की गौरवशाली यात्रा को इंगित करते पत्रक हाथों में लिए हुए अतिथि एवं आर्यजन

साप्ताहिक स्वाध्याय

परोपकारिणी सभा का निर्माण

गतांक से आगे-

महर्षि दयानन्द की दूरदर्शिनी दृष्टि अब समीप आते हुए अन्त को देख रही थी। मेरठ से चलते हुए महर्षि ने आर्य पुरुषों को जो आदेश दिया था, उसके वाक्य बतलाते हैं कि महर्षि भविष्य को देख रहे थे। आपने व्याख्यान में कहा था कि 'महाशयो! मैं कोई सदा बना नहीं रहूंगा। विधाता के न्याय-नियम में मेरा शरीर क्षणभंगुर है। काल अपने कराल पेट में सबको चबा डालता है। अन्त में इस देह के कच्चे घड़े को भी उसके हाथों टूटना है। सोचो, यदि अपने पांव खड़ा होना नहीं सीखोगे तो मेरे आंख मीचने के पीछे क्या करोगे? अभी से अपने को सुसज्जित कर लो! स्वावलम्ब के सिद्धान्त का अवलम्बन करो! अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने योग्य बन जाओ! किसी दूसरे के सहारे की आशा छोड़ अपने पर ही निर्भर करो!' महर्षि के हृदय में यह चिन्ता थी कि मेरे मरने के पीछे सभाओं को संभालने वाला कौन होगा?

संभालने को बहुत-कुछ था। सबसे प्रथम, महर्षि समझते थे कि आर्यसमाजें देश भर में बिखरी हुई हैं। उनका एक केन्द्र-भूत संगठन नहीं है। आपस के लड़ाई-झगड़ों को निबटाने का कोई उपाय नहीं है। दूर-दूर के प्रान्तों में स्थापित हुई समाजें एक-दूसरे से कोई सहायता नहीं ले सकतीं।

दूसरी चिन्ता महर्षि को विदेश-प्रचार की थी। उस समय तक प्रान्तिक प्रतिनिधि सभाएं भी नहीं बनी थीं, सार्वदेशिक सभा का तो अभी विचार ही दूर था। प्रचार का और विशेषतया विदेश-प्रचार का कार्य छोटी सभाओं की शक्ति से बाहर था। ऋषि के चित्त में यह विचार घर किये हुए था कि यदि वैदिक धर्म के योग्य प्रचारक भारत से बाहर भेजे जायं, तो उन्हें अवश्य सफलता होगी।

इसके सिवा महर्षि ने वेदभाष्य तथा अपने अन्य ग्रन्थ छपवाने के लिए 1880 में बनारस में वैदिक प्रेस की स्थापना की थी। वह प्रेस अभी तक निराधार थी। महर्षि को निरन्तर भ्रमण करना पड़ता था, इस कारण हिसाब में सदा गड़बड़ रहती थी। जब सामने ही यह हाल था तो पीछे के लिए क्या भरोसा हो सकता था? महर्षि के ग्रन्थ जहां-तहां छपे पड़े थे। उनका एक स्थान में संग्रह और संभालने का यत्न भी आवश्यक था।

इन सब बातों पर विचार करके महर्षि ने एक ऐसी सभा का बनाना निश्चित किया जो इन त्रुटियों को पूरा कर सके। उदयपुर में 'परोपकारिणी सभा' का विचार उत्पन्न हुआ और पकाया गया। वहीं वह कार्य में परिणत हुआ। इसमें सन्देह नहीं कि महाराणा सज्जनसिंह के सुधार ने महर्षि के हृदय को बड़ा सन्तोष दिया। हिन्दूपति के वैदिक धर्मी बन जाने पर महर्षि को यह भान होने लगा कि अब आर्यसमाज निराधार नहीं है। महाराणा की सज्जनता और दृढ़ता को देखकर उनको विश्वास हो गया कि मेरे पीछे आर्यसमाज को लौकिक सहारे की कमी नहीं रहेगी। इसमें सन्देह भी नहीं कि यदि महर्षि के पीछे उनके योग्यतम शिष्य शीघ्र न चल बसते तो

परोपकारिणी सभा ऐसी निर्जीव संस्था न हो जाती। परोपकारिणी सभा का निर्माण एक वसीयतनामे के रूप में हुआ। वसीयतनामे का प्रारम्भ इस प्रकार था-

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

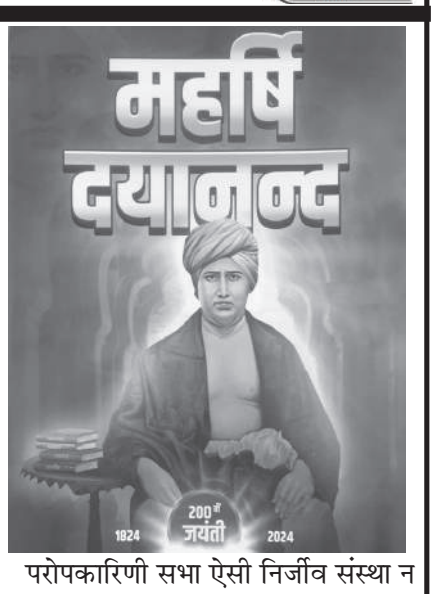

Continue From Last Issue

Organising Paropkarini Sabha

The visionary vision of Rishi Dayanand was now showing the end coming closer. The sentences of the order given by the sage to the Aryan men while leaving Meerut show that the sage was looking to the future. He had said in the lecture that! I will not remain here forever. My body is transitory in the law of the Creator. Kaal chews everyone in his stomach. In the end, even the raw pot of this body has to be broken at his hands. Think, if you don't want to see your feet, then what will you do behind my intestines? Equip yourself now. Follow the principle of self-reliance. Be able to meet your needs! Leave the hope of someone else's support and depend on yourself. Rishi's heart was worried that after his death, who would manage the gatherings?

There was a lot to handle. First of all, the sages understood that the Arya Samajs were scattered all over the country. They don't have a central organization. There is no way to settle mutual disputes. Societies established in far-off provinces cannot take any help from each other.

The second concern was the promotion of Rishi abroad. By that time even provincial representative assemblies had not been formed, the idea of a universal assembly was far away. The work of Prachaar and especially foreign Prachaar was beyond the capacity of small assemblies. The idea was ingrained in the sage's mind that if worthy preachers of the Vedic religion were sent out of India, they would surely be successful.

Apart from this, the sage had established the Vedic Press in Banaras in 1880 to publish Vedbhashya and his other texts. That press was unfounded so far. The sage had to travel continuously, due to which there was always a mess in the calculations. When this was the condition in the beginning, then what could be the hope for the future? The books of Rishi were printed everywhere. It was also necessary to try to collect and handle them in one place.

Considering all these things, the sage decided to form such an institution which could complete these errors. The idea of 'Paropakarini Sabha' originated and ripened in Udaipur. That's where it turned into action. There is no doubt that the reformation of Maharana Sajjan Singh gave great satisfaction to the sage's heart. After Hindutva-panti became a Vedic religion, the sage began to realize that Aryasamaj is no longer baseless. Seeing Maharana's gentleness and firmness, the sage was convinced that Arya Samaj would not lack worldly support after him. There is no doubt that if his most capable disciples had not left sage quickly[died], the charitable society would not have become such a lifeless institution. The Philanthropic Society was formed in the form of a testament. The commencement of the will was as follows-

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के अवसर पर छत्तीसगढ़ में

धर्मरक्षा महायज्ञ एवं वैदिक सनातन संस्कृति सम्मेलन

महर्षि दयानन्द स्मृति वैदिक धर्म महोत्सव
पूर्वी उ.प्र. समिति के अन्तर्गत

वाराणसी में वैदिक धर्म महोत्सव एवं आर्य महासमागम

11 से 13 अप्रैल 2025
संत रविदास मंदिर, भैंसासुर घाट, निकट नमो घाट, वाराणसी

इस अवसर पर यज्ञ, प्रवचन, भजन के अतिरिक्त विविध संगोष्ठियों व समारोहों तथा मानवता एंव राष्ट्र-हित हेतु सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में समतामूलक समाज के सृजन हेतु विशेष आयोजन होंगे।- **संयोजक**

शोक समाचार

श्री मिठाई लाल सिंह जी का निधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व उप प्रधान, आर्य, आर्य प्रतिनिधिभा मुम्बई के पूर्व प्रधान एवं संरक्षक तथा दि प्रताप कॉऑपरेटिव बैंक के संस्थापक निदेशक और आर्यसमाज माटुंगा एवं विद्यालय समूह के महामन्त्री श्री मिठाई लाल सिंह जी का दिनांक 6 अप्रैल, 2025 को सायं 4 बजे 97 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 8 अप्रैल को सायन शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से हुआ।

डॉ. वेद प्रकाश आर्य जी का निधन

आर्यसमाज के विद्वान, लेखक, कवि, साहित्य कार एवं आर्य लोक वार्ता के सम्पादक एवं संचालक डॉ. वेद प्रकाश आर्य जी का 85 वर्ष की आयु में लम्बी बीमारी के उपरान्त 17 मार्च, 2025 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार गोमती नदी के तट पर पूर्ण वैदिक रीति से हुआ तथा उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 19 मार्च को सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

पृष्ठ 2 का शेष

वक्फ की मनमानी से ......

कारण यह है कि एक मुसलमान सड़क के किनारे किसी सरकारी या निजी जमीन पर कहीं कोई मस्जिद या मजार बनाकर बैठ जाए तो कुछ समय बाद वह जगह वैध हो ही जाती है। ऐसा वक्फ कानून-1995 के 2013 के संशोधन के कारण हो रहा है। इसलिए कोई मुसलमान कहीं भी अवैध मजार या मस्जिद बना लेता है और एक अर्जी वक्फ बोर्ड में लगा देता है। बाकी काम वक्फ बोर्ड करता है। यही कारण है कि आज पूरे भारत में अवैध मस्जिदों और मजारों का निर्माण बेरोकटोक हो रहा है। पिछले दो सालों में देश के अलग -अलग उच्च न्यायालयों में वक्फ से जुड़ी करीब 120 याचिकाएं दायर की गई थी। ये याचिकाएं कैसी थी, आप समझ लीजिए कि जुलाई 2022 में खबर आई थी कि उत्तर प्रदेश शिया सेंट्रल वक्फ बोर्ड की मिलीभगत से लखनऊ के एक शिवालय को वक्फ संपत्ति के रूप में दर्ज करवा दिया गया था। जबकि 1862 के राजस्व रिकॉर्ड में हिंदू शिवालय दर्ज है, और ये वक्फ बोर्ड 1908 में बना था, लेकिन फिर भी जमीन वक्फ की हो गई ।

मई 2020 में जिंदल ग्रुप की एकल खनन साइट पर मस्जिद नुमा एक छोटी सी दीवार बनाकर राजस्थान वक्फ बोर्ड ने यह कहकर अपना हक जताया था कि यह जमीन वक्फ बोर्ड की है। मामला जब जस्टिस हेमंत गुप्ता और जस्टिस वी रामसुब्रमण्यम की खंडपीठ के सामने पहुंचा, तो सर्वोच्च न्यायालय की पीठ ने कहा कि एक जर्जर दीवार को नमाज अदा करने के इरादे से मजहबी स्थान (मस्जिद) का दर्जा नहीं दिया जा सकता है।

साल 2013 में तत्कालीन मनमोहन सरकार ने वक्फ कानून-1995 में संशोधन कर उसे ऐसे अधिकार दे दिए कि किसी भी संपत्ति को वक्फ संपत्ति घोषित करने से पहले उसके मालिक को सूचित करना जरूरी नहीं है। यानी यह मानकर चलिए कि कोई आपके चबूतरे पर मजाक में भी चुपके से 786 लिख गया और वक्फ ने उसे संपत्ति घोषित कर दिया, तो जमीन वक्फ की। यानी अगर बोर्ड किसी संपत्ति को मुस्लिम कानून के अनुसार पाक मजहबी मान ले, तो वह संपत्ति वक्फ बोर्ड की हो जाएगी। अब अगर किसी को बोर्ड के इस फैसले से ऐतराज है, तो वह वक्फ से गुहार लगा सकता है। वक्फ एक्ट 1995 के आर्टिकल 40 के अनुसार यह जमीन किसकी है, यह वक्फ का सर्वेयर और वक्फ बोर्ड ही तय करेगा। शायद इसी कारण अब ये लोग इस विशेष षड्यंत्र से ऐतिहासिक इमारतों और भवनों के आसपास नमाज पढ़ने लगे हैं। कभी किसी पार्क में, कभी किसी खाली पड़ी जमीन पर, अगर वहां कुछ दिन बेरोक-टोक नमाज पढ़ ली, तो फिर वक्फ उस जमीन पर भी अपने कब्जे का दावा ठोक देगा। यही कारण है कि कुतुब मीनार, जो भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधीन है, लेकिन मुसलमान इस पर कब्जा करने के लिए वहां नमाज पढ़ने लगे हैं। विडंबना देखिए, अगर किसी को वक्फ बोर्ड के फैसले से ऐतराज है, तो वह अपनी संपत्ति से जुड़े विवाद को निपटाने के लिए वक्फ ट्रिब्यूनल में जा सकता था, जहाँ कब्जाधारी ही सुनवाई कर सकते थे। किंतु अब वक्फ बोर्ड के पर सरकार ने कतर दिए हैं, हालाँकि लोगों का कहना है कि जब किसी मुस्लिम देश में वक्फ नहीं है, तो फिर भारत में यह तमाशा क्यों? इस बोर्ड को ही समाप्त कर देना चाहिए। **-संपादक**

पृष्ठ 3 का शेष

आर्य समाज काकड़वाड़ी बम्बई का मन्दिर ......

पाठ किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि यज्ञ की अग्नि को प्रचलित करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ है इसको निरंतर प्रज्वलित रखने का हमारा संकल्प है और हम निरंतर आर्य समाज के सेवा कार्यों को आगे बढ़ाते रहेंगे, यह आगाज है, अक्टूबर के महीने में दिल्ली में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का, उसकी सफलता के लिए हम सब कृत संकल्पित हैं।

आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान श्री सुरेंद्र रैली जी ने अपनी चिर परिचित शैली में सभी को नमस्ते का अभिवादन किया और कराया, साथ में अपने संबोधन में महर्षि दयानंद और आर्य समाज के विचारों को प्रचारित प्रसारित करने का आवाहन किया। केंद्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश चडडा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि तैयार हो जाइए, बिगुल बज चुका है अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में होना यह हमारे लिए गौरव की बात है और हम सब मिलकर उसको सफल बनाने में पूरी शक्ति लगाएंगे। मुंबई सभा के प्रधान श्री हरीश आर्य जी ने मुंबई में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में उपस्थित आर्य जनों का हार्दिक आभार किया और जो वहां नहीं पहुंच पाए भविष्य में जो आयोजन होंगे उनसे पहुंचने के लिए निवेदन किया, आज मिल सब गीत गाओ उस प्रभु का धन्यवाद। भजन सबने एक साथ मिलकर गुनगुनाया और सभी उमंग उत्साह और उल्लास से भर उठे।

अतिथि महानुभावों के उद्बोधन

इस अवसर पर श्री विजेंद्र गुप्ता स्पीकर दिल्ली विधानसभा ने उपस्थित आर्यजनों को 150वें स्थापना वर्ष की बधाई देते हुए अपने उद्बोधन ने कहा की आर्य समाज की 10000 से अधिक संस्थाएं संपूर्ण विश्व में वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का प्रचार-प्रसार कर रही हैं। आगामी अक्टूबर में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मेरे विधान सभा क्षेत्र में आयोजित होगा, यह मेरे लिए गौरव की बात है और इसके लिए मैं सभी को अंतर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन में पधारने का निमंत्रण देता हूं, आर्य समाज के सेवा कार्य अपने आप में बहुत अद्भुत है, महर्षि दयानंद को मैं नमन करता हूं।

श्री बच्चन सिंह आर्य जी ने महर्षि दयानंद गौशाला गाज़ीपुर का वर्णन करते हुए कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती के सिद्धांत, मान्यताएं और परंपराएं अपने आप में आदर्श हैंऔर हम उनको आगे बढ़ाते रहेंगे जिसमें विनय आर्य जी का मार्गदर्शन बहुत व्यापक है।

पंजाब केसरी की चेयरपर्सन श्रीमती किरण चोपड़ा जी ने आर्य समाज और पंजाब केसरी के संबंध की मार्मिक व्याख्या करते हुए हुए बताया कि किस तरह लाला जगत नारायण जी ने आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया, स्व. श्री अश्विनी चोपड़ा और स्वयं के विषय में उन्होंने कहा कि आर्य समाज हमारे अंदर पूर्ण रूप से भरा हुआ है, आर्य समाज एक जीवन शैली है। आपने सोशल मीडिया के विशेष प्रयोग के लिए आर्य जगत का आह्वान किया।

दिल्ली के युवा नेता एवं लोक निर्माण मन्त्री श्री प्रवेश साहिब सिंह वर्मा ने अपने उद्बोधन में युवाओं को आगे आने के लिए संदेश दिया और आपने वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़ाने की बात कही।

श्रीमती शिखा राय विधायक जी ने भी आर्य समाज को स्थापना दिवस पर बधाई दी और महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त किया।

श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी अध्यक्ष अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ और अध्यक्ष जेबीएम ग्रुप ने अपने विशेष उद्बोधन में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र जी के जन्मोत्सव की बधाई देते हुए उपस्थित जनसमूह का आह्वान किया की राम जी के जीवन के आदर्शों को धारण कर हम जीवन पथ पर आगे बढ़ें, आर्य समाज के 150वें वर्ष के आयोजनों का आज शुभारंभ है और आगामी अक्टूबर में 9, 10, 11, 12 अक्टूबर 2025 को दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन होना सुनिश्चित है। आपने दिल्ली सरकार से भी सहयोग की अपेक्षा की तथा लाखों परिवारों तक आर्य समाज महर्षि के विचारों को, सेवा कार्यों को लेकर के जाएंगे, ऐसा उन्होंने निर्देश सहित निवेदन किया। आपने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज का 150वें स्थापना वर्ष हम लगातार मनाते आ रहे हैं, आज महर्षि दयानंद सरस्वती की ही देन है कि भारत की माननीय राष्ट्रपति, वित्तमंत्री और दिल्ली की मुख्यमंत्री महिलाएं हैं। यह महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा और विचारों का ही प्रताप है। महर्षि ने स्वदेश, स्वराज और स्वधर्म का कार्य किया, आज आर्य समाज टूटते परिवार, बिछड़ते अपने और पर्यावरण संरक्षण के लिए अनेक कार्य कर रहा है। इस अवसर पर श्री आर्य जी ने सबको बधाई और शुभकामनाएं दी।

दिल्ली सरकार के कैबिनेट मंत्री श्री मनजिंदर सिंह सिरसा जी ने भी आयोजकों को बधाई देते हुए आर्य समाज के सेवा कार्यों की सराहना की और आगामी अक्टूबर में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में पूरी शक्ति के साथ सम्मिलित होने का आश्वासन दिया।

सभा के महामंत्री ने आर्य समाज द्वारा चलाए जा रहे अभियानों का संक्षिप्त वर्णन करते हुए कहा कि यमुना की सफाई, वृक्षारोपण के सेवा कार्यों के साथ ही आर्य समाज वर्तमान समय में देश के सामने जो चुनौतियां हैं, उनके प्रति समाज को जागृत करने का कार्य एक आंदोलन के रूप में कर रहा है। चाहे पारिवारिक रिश्ते हों या समाज के बीच जातिवाद का जहर घोलने की बात हो या फिर पर्यावरण संरक्षण की बात हो या नशा जो आज की युवा पीढ़ी को कमजोर करने का कार्य कर रहा है या फिर अंधविश्वास की बात हो, हर स्तर पर आर्य समाज चुनौतियों का चिंतन ही नहीं समाधान की ओर लगातार प्रयासरत है। वक्फ संशोधन बिल के पास होने पर आर्य समाज की ओर से भारत सरकार को बधाई दी गई । देश की सीमाओं को सुरक्षित रखने के लिए जो कार्य किया जा रहा है उसकी अपने प्रशंसा की और दिल्ली को भारत की श्रेष्ठ राजधानी बनाने के लिए जो कार्य योजना गतिशील है उनका भी अपने आर्य समाज की ओर से स्वागत किया।

महानुभावों का सम्मान

आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के इस विशेष आयोजन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री सुरेंद्र रैली जी प्रधान आर्य केंद्रीय सभा और श्री विद्यामित्र ठुकराल जी कोषाध्यक्ष दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, श्री प्रवेश वर्मा जी इत्यादि ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। विशेष रूप से आर्य समाज के सहयोग सेवा में अपना अनुपम योगदान देने वाले श्री पंकज सचदेवा जी, श्री गगन मित्तल जी को भी सम्मानित किया गया।

मुंबई में आर्य समाज की स्थापना पर आधारित प्रेरक नाटिका का मंचन

यह तो सब जानते ही हैं कि जिस समय आर्य समाज की महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा मुंबई में स्थापना की गई तब ढोंग, पाखण्ड और अंधविश्वास सर चढ़कर बोल रहा था। महर्षि दयानंद सरस्वती जी वेदों के आधार पर सत्य की राह पर चलने के लिए मानव मात्र को संदेश दे रहे थे, तो उस समय किस तरह की परिस्थितियों बनीं, किस तरह के कारण बने, कि महर्षि दयानंद सरस्वती को मुंबई में प्रवचनों के लिए बुलाया गया और मुंबई में प्रथम आर्य समाज की स्थापना की गई, इसको आधार बनाकर एक सुंदर प्रेरक नाटिका देखकर सभी उपस्थित जन समुदाय भाव-विभोर हो गया और सभी ने नाटिका का मंचन करने वाले युवा किशोर और बच्चों को तालियां बजाकर बधाई दी।

दीप प्रज्ज्वलन : दिल्ली के मुख्यमंत्री, श्रीमती रेखा गुप्ता जी का आर्य समाज की ओर से अभिनंदन और स्वागत किया गया तथा उनके परिचय के रूप में एक वीडियो प्रसारित करके दर्शाया गया कि किस तरह से उन्होंने कॉलेज टाइम की राजनीति से लेकर अब तक एक संघर्ष पूर्ण यात्रा की। अब आप किस तरह से दिल्ली को एक भारत की श्रेष्ठ राजधानी बनाने के लिए कार्यरत है। श्रीमती रेखा गुप्ता जी, श्रीमती किरण चोपड़ा जी, श्रीमती सुषमा जी और श्री अनिल अग्रवाल जी, संघ संचालक, दिल्ली द्वारा आर्य समाज स्थापना वर्ष पर 150 दीपक का प्रज्वलित करके कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया तथा धन्यवाद और शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। ❐

⑧
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
सोमवार 7 अप्रैल, 2025 से रविवार 13 अप्रैल, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 10-11-12/04/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 09 अप्रैल, 2025

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली में आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के आयोजनों का भव्य शुभारम्भ

ध्वज यात्रा में सम्मिलित आर्य समाज के अधिकारी और आर्य वीर, वीरांगनाएं तथा आर्यसमाज की युवा शक्ति आर्य वीर-आर्य वीरांगना दल द्वारा मानव सेवा का संकल्प और आर्यसमाज की उन्नति की प्रार्थना करते हुए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह